आज के दौर में हज़रत अली (अ0) के तालीमात की अहमियत

मौलाना डाक्टर मुहम्मद वारिस हसन नक़वी साहिब क़िब्ला इब्ने ख़तीबे आज़म

अगर यह मौजू मुझे तारीख़े इन्सानी की किसी और शख़सियत के मुताल्लिक़ दिया जाता तो मैं कहता कि हर ज़माना और दौर अपने वाक़ेआत, अपनी मुशकिलात और अपनी शख़सियत में अकेला है। चूँकि पिछले दौर का हर ज़माना और इसकी इल्मी सतह एक जैसी नहीं है। इसलिए उसके अफ्कार और उनके अरबाबे फिक्र व नज़र के तालीमात भी बदलते रहते हैं। एक अहद का ''इन्साने कामिल'' जब दूसरे अहद पर परखा गया तो वह इतना कामिल न निकला जितना इसे ख़ुद इसके अहद के लोग समझते थे। यही हाल तमाम तालीमाते बशरी का है जहाँ हर नज़रिया और हर क़ानून माहौल के तक़ाज़ों और दर्जा बदर्जा इल्मी निशो नुमा की पैदावार है। फ़लसफा व अख़लाक़ियात का मुताला कीजिये तो आप मुलाहेज़ा फरमाएँगे के एक ज़माने के मुहकमात दूसरे ज़माने के लिए मुताशाबेहात की शक्ल इख़्तियार करते रहते हैं और एक अहद का मुअल्लिम और उसके तालीमात दूसरे अहद के मुबस्सिर और नक़्क़ाद की नज़र में इतने क़ाबिले तारीफ व तक़लीद नहीं जिस तरह वह उस वक़्त तक समझे और माने जाते थे। मगर यह अगर एक कुल्लिया (क़ानून) है तो इसमें मुस्तसनियात (Exception) भी हैं।

और इन मुस्तसनियात (Exception) में अली (अ0) हैं। उनकी तालीमात कुछ ऐसी है जो हर ज़माने के लिए रास्ता बताने वाली साबित होती रही हैं।

रसूले इस्लाम (स0) के बाद इस्लाम के इख़्तेलाफात पैदा हुए नज़रियात व अक़ाएद में बिगाड़ सामने आया लेकिन यह इख़्तेलाफात अवाम को अली (अ0) की शख़सियत और उनके तालीमात से हटा न सके। अली (अ0) वह थे जिन्हें आलमगीर इस्लामी दौलत की सरबराही 35 हि0 से 40 हि0 तक हासिल रही इसलिए वह तमाम के तमाम इस्लामी फिरक़ों के लिए पहले इमाम और चौथे ख़लीफा की हैसियत रखते हैं। वह इमाम और वह ख़लीफा जिसकी तालीमात पर ध्यान देना दीनी व मज़हबी फर्ज़ है। मगर क्या इन तालीमात पर ध्यान देना दीनी व मज़हबी फर्ज़ इसलिए बना कि अली ख़िलाफत के ओहदे पर फाएज़ हुए? नहीं, बक़ौल इमाम अहमद बिन हम्बलः ''ख़िलाफत ने अली को ज़ीनत नहीं बख़्शी थी बल्कि अली ने ख़िलाफत को ज़ीनत बख़्शी थी।'' शिया और मुअ्तज़िला (जो उलमाए अहले सुन्नत में शुमार किये जाते हैं) असहाबे नबी में उन्हें सबसे अफज़ल क़रार देते हैं चूँकि अली वह थे जिनकी पेशानी कभी किसी बुत के सामने नहीं झुकी थी। अली (अ0) वह थे जिन्होंने आग़ोशे रसूल (स0) में परवरिश पाई थी, अली (अ0) वह थे जो पैग़म्बरे इस्लाम के सगे चचा के बेटे भी थे और उनके दामाद भी। अली (अ0) वह थे जिनकी तलवार ने बद्र, ओहद, ख़न्दक़ और ख़ैबर की लड़ाइयों में यूँ हिस्सा लिया था कि कामियाबी और जीत इस्लाम की अकेली ज़िम्मेदार बन गई थी। अली (अ0) वह थे जिनकी जिस्मानी ताक़त

की गूँज हमारे ज़माने तक पहुँची है जबकि हर पहलवान जो कुश्ती के लिए अखाड़े में उतरता है तो या अली (अ0) कहता हुआ उतरता है। और जिनकी रूहानी ताक़त की बाज़गश्त आप उन सूफियाए केराम के तालीमात में पाएँगे जो दुनिया के गोशों–गोशों में फैल गये और उनमें से कुछ हिन्दुस्तान में हमेशा–हमेशा के लिए आबाद हो गये जैसे निज़ामुद्दीन और ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती। इमाम शाफई की मशहूर व मारूफ रुबाई बहुत से घरों के लिए घर की सजावट है वह रुबाई जिसमें इमाम शाफई फरमाते हैं:

''अली (अ0) वह हैं जिनकी मुहब्बत आख़िरत के लिए ढाल है। जो जन्नत और दोज़ख़ के बाटने वाले हैं। यक़ीनन वह मुस्तफा के वसी हैं। और इन्सानों और जिनों (दोनों) के लिए इमाम हैं।''

मिर्ज़ा ग़ालिब शायर थे और हिन्दुस्तान के मशहूर शायर लेकिन वह मुजतहिद न थे मगर अली (अ0) की मुहब्बत ने उनके दिल में जोश और वलवले पैदा किये थे कि उन्होंने फतवा देने से गुरेज़ न किया और फरमाया:

ग़ालिब नदीमे दोस्त से आती है बुए दोस्त
मशगूले हक़ हूँ बन्दगी–ए– बू तुराब में

यह तो थी शख़सियत और उसके असरात जो मुख़तलिफ ज़बानों के जानकार और फनकार लोगों पर पड़े हैं। मगर यह कि अली (अ0) की तालीमात किस तरह हमारे ज़माने से लगाव रख सकती हैं वह सवाल है जिसका जवाब ''नह्जुल बलाग़ह'' के मुफस्सिरीन ने अपने–अपने ज़मानों में दिया है। लेकिन मुझ इजाज़त दीजिये कि मैं एक नया रास्ता इख़्तियार करूँ। एक लम्हे के लिए अली (अ0) की तरफ देखने के बजाए अपने ज़माने की तरफ देखूँ।

मेरे ज़माने और मेरे मुहीत में जो लोग हुकूमत हासिल करना चाहते हैं वह अक्सर मज़हबी जज़्बात और अवाम की जाहिलियत से फायदा उठाने से शुरुआत करते हैं। हाल ही में हमने देखा कभी ''मन्दिर'' के बारे में क़यामत ख़ेज़ ख़िताबत से और कभी ''मस्जिद'' के बारे में घनगरज से, इस दुनिया परस्ती और ख़्वाहिशाते नफ्सानी की पूजा के सिलसिले में हज़ारों बेगुनाहों का अगर ख़ून बह जाए तो हुकूमत पसन्दों को ज़र्रा बराबर परवाह नहीं होती, अगर मुल्क का एक हाथ दूसरे हाथ को काट दे तो उन्हें दुख नहीं होता। वह नहीं देखते कि उनकी कुर्सी वज़ारते मुल्क के कराहते हुए बदन पर रखी हुई है अब ऐसी सूरतेहाल में देखिये कि अली (अ0) की तालीम क्या हो सकती है।

जब रबीउल अव्वल 11 हि0 में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने दुनिया छोड़ी तो अली (अ0) को उनकी जगह पर बैठने के तमाम हुक़ूक़ हासिल थे। अस्हाबे रसूल (स0) में वह सबसे ज़्यादा आलिम और सबसे बेहतर मुक़र्रिर थे लेकिन इसके बावजूद कुरैश और कुछ अस्हाब ने अबुबक्र को ख़लीफा चुन लिया। अली (अ0) के साथ रसूले इस्लाम (स0) के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, ज़ुबैर बिनुल अव्वाम, सलमान, मिक़दाद, अबुज़र, अम्मार बिन यासिर और तमाम के तमाम बनी हाशिम थे। और सबसे ज़्यादा यह कि अली (अ0) के हाथ में वह तलवार थी जिसने इस्लामी जंगों की क़िस्मतें पलट दी थीं मगर अली (अ0) ने एहतेजाज तो किया मगर जंग न की। उन्होंने यह समझा कि वह अगर अपने हक़ के लिए जंग करेंगे तो वह उनकी ज़ाती हुकूमत की जंग समझी जाएगी जिसमें मुसलमान, मुसलमान को क़त्ल करेगा। इस्लाम और मुल्क टुक्ड़े–टुक्ड़े हो जायगा। इसलिए अली (अ0) ने अपने हक़ को

मुल्क, अक़ीदे और अवाम की सलामती के लिए क़ुर्बान कर दिया। अब अगर हम अली (अ0) की पैरवी करें तो हमारा तरीक़ा यह होगा कि हमें मुल्क की सलामती और फ़ाएदे का पहले और अपनी तरक़्क़ियों का ख़याल बाद में आयेगा।

मेरे ज़माने में लोग वही बातें सुन्ते हैं जो उनकी अपनी पार्टी वाले कहते हैं वह अपने कान मुख़ालिफ पार्टी और उनकी तक़ारीर की तरफ से बन्द कर लेते हैं चाहे वह लोग सच्ची बात ही क्यों न कह रहे हों। उन्हें तमन्ना होती है कि उनका उम्मीदवार जीत जाए चाहे वह झूठ ही क्यों न बोल रहा हो और दूसरा उम्मीदवार हार जाए चाहे वह सच ही क्यों न बोल रहा हो। इस जगह पर अली (अ0) की तालीम मेरी नज़र में जमहूरियत (लोगों) के लिए फायदेमन्द है और मुल्क के लिए भी। वक़्त वह है जब जंगे जमल लड़ी जा रही है, किसी ने पूछा ''मौला क्या ऐसा हो सकता है कि इतने बड़े–बड़े लोग बातिल पर हों?'' जवाब में अली (अ0) ने फरमायाः ''पहले यह जान लो कि सच्चाई क्या है फिर सच बोलने वाले अपने आप समझ में आ जाएँगे।''

मेरे ज़माने में एक इलेक्शन जीतने के बाद उम्मीदवार इसको फितरी समझता है कि वह अपनी अज़ीज़ों अपने दोस्तों और अपने मददगारों को नवाज़े चाहे इस क़िस्म का नवाज़ना मुल्क और अवाम के हुक़ूक़ को पामाल ही क्यों न करता हो इसके बरख़िलाफ अली की तालीम यह है कि ऐसा करना मुल्क से खुली–खुली ख़यानत है। मिसाल के तौर पर यह तारीख़ी वाक़ेआ सुनियेः

वक्त वह है जब अली (अ0) मुसलमानों के ख़लीफा हैं, हुकूमत के ख़ज़ाने के मालिक हैं। उस ख़ज़ाने से हर मुसलमान शहरी को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ शहरिया मिलता है, अली के सगे भाई, अक़ील उनसे मिलने आते हैं और कुछ माल तलब करते हैं। अली (अ0) पूछते हैं कि क्या उनके हिस्से का शहरिया उनको नहीं मिला? अक़ील जवाब देते हैं कि वह अतिया तो उनको मिला मगर उनको इससे ज़्यादा ज़रूरत है। यह सुनने पर अली (अ0) क़म्बर को हुक्म देते हैं कि आग रौशन करो और जब क़म्बर की जलाई हुई आग भड़क उठती है तो अली (अ0) अक़ील को हुक्म देते हैं कि इसमें दाख़िल हो जाओ। अक़ील ताज्जुब करते हुए कहते हैंः ''क्या तुम इस आग से अपने भाई को जलाओगे?'' अली (अ0) जवाब देते हैंः और क्या तुम कल की आग से अपने भाई को जलाना नहीं चाहते? चूँकि यह ख़ज़ाना खुदा का ख़ज़ाना है और माल अवाम का माल है!''

तलहा और ज़ुबैर रसूल (स0) के अस्हाब में बहुत मुम्ताज़ अस्हाब थे और उन लोगों में आगे–आगे थे जिन्होंने अली (अ0) की बैअत की थी। खुफिया तौर पर उन्हें उम्मीद थी कि अली (अ0) ख़लीफा बनने के बाद तलहा को बसरे का और ज़ुबैर को कूफ़े का गवर्नर बनाएँगे। यह उम्मीद लिये हुए वह अपने चुने हुए ख़लीफ़ा से मिलने गये।

रात का वक़्त था अली (अ0) बैतुलमाल के हिसाब लिख रहे थे जब तलहा और ज़ुबैर ने अली (अ0) से कहा कि वह उनसे मिलने आए हैं अली (अ0) ने चिराग़ बुझा दिया और फ़रमाया कि यह चिराग़ बैतुलमाल के लिए लाए गए तेल से जल रहा था और मेरी और तुम्हारी बातचीत शख़्सी और ज़ाती होगी इसलिए मैंने यह चिराग़ बुझा दिया। तलहा और ज़ुबैर यह देखकर हैरत में पड़ गये और बिना फरमाइश और मद्दआ वापस चले गये।

□□□